शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2013

समाज और शिक्षा में संबंध

डा.बलवीर सिंह जमवाल
प्रिंसीपल बी.के.एम.कालेज आफ एजुकेशन
बलाचैर, शहीद भगतसिंह नगर, पंजाब, भारत

शोध संक्षेप

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। शिक्षा उसका अविभाज्य अंग है। समाज का स्वरूप और आदर्श एक जैसा नहीं रहता। वह समय-समय पर बदलता रहता है। समाज के बदलते स्वरूप और आदर्श के कारण शिक्षा का ढांचा और स्वरूप भी बदलता रहता है। हमारे समाज के अनुरूप ही शिक्षा का ढांचा होता है। समाज जीवन बदलने पर शिक्षा का बदल जाना भी स्वाभाविक है। प्रस्तुत शोध पत्र में लेखक ने समाज, शिक्षा, समाज के उत्थान में शिक्षा और शिक्षा के सुधार में समाज की भूमिका पर प्रकाश डाला है।

भूमिका

शिक्षा मां के गर्भ से ही शुरू हो जाती है। यह सत्य है कि व्यक्ति समाज में रहकर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा ग्रहण करता रहता है। शिक्षा समाज के हर वर्ग को सभी कालों में शिक्षित करती है। शिक्षा एक सामाजिक आवश्यकता है। शिक्षा ही वह विशेष निधि है जो संपूर्ण सृष्टि में केवल मनुष्य को प्राप्त होती है। जिसके विकास से मनुष्य में विवेक का जन्म होता है। जिसकी वजह से वह उचित-अनुचित, सही-गलत, सत्य और असत्य में विभेद करने में सफल होता है। शिक्षा समाज का दर्पण है, जो समाज के स्वरूप को परिभाषित करती है। शिक्षा का हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी, गुरु से शिष्य में होता रहता है।

किसी जमाने में शिक्षा के क्षेत्र में संपूर्ण विश्व में भारत का नाम अग्रणी था। यहां पर कुल गुरुओं द्वारा धर्म व दर्शन पर आधारित शिक्षा दी जाती थी। इन शिक्षा केंद्रों में गणित, इतिहास, अर्थशास्त्र व ज्योतिष की पढ़ाई पर बल दिया जाता था। कालांतर में यह शिक्षा पद्धति छिन्न-भिन्न हो गई। भौतिक विज्ञान के विकास ने शिक्षा की दशा और दिशा बदल दी।

समाज मनुष्य के सामाजिक संबंधों का नाम है। व्यक्ति समाज में ही रहकर अपना विकास करता है। समाज एक ऐसा संगठन है, जिसमें मनुष्यों के व्यवहार और संबंध पाये जाते हैं। समाज के बारे में ओटाव ने लिखा है कि "समाज एक प्रकार का समुदाय या समुदाय का एक भाग है, जिसके सदस्यों में अपने जीवन की विधि की सामाजिक चेतना होती है और जिसमें सामान्य उद्देश्यों और मूल्यों के कारण एकता होती है। वे किसी न किसी संगठित ढंग से एक साथ रहने का प्रयास करते हैं। किसी भी समाज के सदस्यों की अपने बच्चों का पालन-पोषण करने और शिक्षा देने की निश्चिन्त विधियां होती हैं।

समाज तथा शिक्षा का संबंध

वायड एच.वोड ने समाज तथा शिक्षा में संबंध के बारे में कहा है, "समाज और शिक्षा का एक दूसरे से पारस्परिक कारण और परिणाम का संबंध है। किसी भी समाज का स्वरूप उसकी शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप को निर्धारित करता है और इस व्यवस्था का स्वरूप समाज के स्वरूप को निर्धारित करता है।" शिक्षा व समाज के बीच में एक गहरा संबंध है। दोनों एक-दूसरे पर गहरा प्रभाव डालते हैं। एक का विकास, दूसरे के विकास का परिणाम व एक की अवनति दूसरे की अवनति का परिणाम होती है। जब भी समाज में शिक्षा की व्यवस्था की जाती है, तब वह सर्वप्रथम अपने आदर्षो और आवश्यकताओं को सामने रखता है। इस संबंध में ओटाव ने लिखा है, "किसी भी समाज में दी जाने वाली शिक्षा समय-समय पर उसी प्रकार बदलती है, जिस प्रकार समाज बदलता है।" शिक्षा समाज के जीवन की संपूर्ण विधि पर आश्रित रहती है। अतः इस विधि के बदल जाने पर शिक्षा का बदल जाना स्वाभाविक है।

समाज के विकास में शिक्षा की भूमिका

यह सत्य ही कहा जाता है कि समाज का विकास और उन्नति, शिक्षा के बिना असंभव है। समाज के विकास में शिक्षा की भूमिका के बारे में निम्नलिखित ढंग से दर्शाया गया है:

1 शिक्षा द्वारा ही बालक का सामाजीकरण होता है।

2 विचारों, आदर्शों और संस्कृति को धीरे-धीरे अन्य बालकों व शिक्षकों के संपर्क में आने पर अपना लेता है और परिवर्तन लाता है।

3 शिक्षा सामाजिक परिवर्तन लाने में सहायक होती है।

4 समाज की परंपराएं, रीति-रिवाज का निर्धारण भी शिक्षा ही करती है।

5 शिक्षा सामाजिक कुरीतियों को समाज से अलविदा कहने पर मजबूर करती है या जड़ से उखाड़ फेंकती है।

6 शिक्षा सामाजिक कुरीतियों का पर्दाफाष करती है।

7 शिक्षा ही समाज के दोषों व कुप्रथाओं पर नियंत्रण करती है।

8 शिक्षा ही सुव्यवस्थित समाज का निर्माण करती है।

9 शिक्षा ही समाज के लोगों में व्यवसाय दक्षता प्रदान करके उनको अलग-अलग क्षेत्रों में कार्य करने योग्य बनाती है।

10 शिक्षा ही समाज में आर्थिक विकास के लिए मुख्य भूमिका अदा करती है।

11 शिक्षा ही समाज के लोगों को उनके अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति जागरूक करती है।

12 शिक्षा ही अच्छी राजनैतिक विचारधारा की रक्षा व विकास करती है।

13 शिक्षा ही अच्छे राजनेता पैदा करती है।

14 शिक्षा ही लोकतंत्र की रक्षा करती है।

15 शिक्षा ही समाज के लोगों को वोट के मूल्य व महत्व के प्रति जागरूक करती है।

16 शिक्षा ही समाज का राजनैतिक विकास करती है।

17 शिक्षा ही समाज के लोगों को संकुचित विचारों से ऊपर उठाकर उदारवादी बनाती है।

18 शिक्षा ही समाज के अल्पतम और निष्चित साधनों द्वारा अधिक से अधिक सामाजिक कल्याण की विधि को सिखाती है।

19 शिक्षा ही समाज की तमाम मांगों, मान्यताओं और आवश्यकताओं के बदलते स्वरूप के साथ तालमेल बैठाती हुई उनकी पूर्ति भी करती है।

20 शिक्षा ही सामाजिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों को हस्तांतरित करती है।

21 शिक्षा प्रत्येक समाज की गौरवमयी संस्कृति व सभ्यता को नष्ट होने से बचाती है।

22 शिक्षा ही समाज के लोगों को सुखी, संपन्न तथा समृद्धिशाली जीवन व्यतीत करने के लिए विधि-विधान सिखाती है।

23 शिक्षा समाज के लोगों में सहयोग, सद्भावना, सहानुभूति, सहनशीलता, आत्मविश्वास, आत्मानुशासन और कर्तव्यपरायणता एवं जनतांत्रिक मूल्यों का विकास करती है।

24 शिक्षा ही समाज के लोगों को चरित्र और नैतिकता की षिक्षा देती है।

25 शिक्षा ही समाज के लोगों को समायोजन का पाठ पढ़ाती है।

26 शिक्षा ही समाज को संस्कारों का पाठ पढ़ाती है।

27 शिक्षा ही समाज के विरुद्ध कार्यों के प्रति जनमत तैयार करती है।

28 शिक्षा ही समाज में अच्छी बातों का स्वागत करती है तथा गलत बातों व संस्कारों पर नियंत्रण करती है।

29 शिक्षा ही समाज की धार्मिक दषाओं में परिवर्तन लाती है।

30 शिक्षा ही समाज के लोगों को प्राचीन इतिहास से परिचित करवाती है और भविष्य में उन्नति के लिए रास्ता दिखाती है।

31 शिक्षा ने ही समाज के लोगों की सोच बदलकर औरत को पुरुष के बराबर दर्जा दिया है और साक्षरता दर बढ़ा दी है।

32 शिक्षा ही समाज के लोगों के अंधविश्वास को दूर करती है।

33 शिक्षा ही समाज की संस्कृति में परिवर्तन को स्वीकार व अस्वीकार करने की योग्यता व दिशा प्रदान करती है।

34 शिक्षा ही समाज के लोगों में कर्मयोग की भावना का विकास करती है।

समाज की शिक्षा में भूमिका

1 समाज दशा और दिशा के अनुसार ही षिक्षा प्रणाली स्थापित की जाती है। समाज की राजनैतिक दशा बदलने के साथ शिक्षा प्रणाली भी बदल जाती है। जैसे स्वतंत्रता के पूर्व अंग्रेजों की शिक्षा पद्धति, स्वतंत्रता के बाद सबके लिए शिक्षा का सिद्धांत, वर्तमान में सभी लड़कियों को फ्री

एडुकेशन, सर्व शिक्षा अभियान और राइट टू एजुकेशन, कम्पलसरी एजुकेशन आदि।

2 सामाजिक परिवर्तनों के कारण शिक्षा प्रणाली में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक ही है। समाज परिवर्तनों के कारण ही समाज, शिक्षा प्रणाली की स्थापना करता है। उदाहरण के तौर पर पूर्व भारतीय समाज में सती प्रथा, बालविवाह प्रथा, अस्पृश्यता आदि कुरीतियां समाज में व्याप्त थीं, लेकिन समय के साथ-साथ परिवर्तन आया और इन बुराइयों के विरुद्ध आंदोलन शुरू कर दिए। परिणाम यह निकला कि सभी को शिक्षा में समान अधिकार एवं शिक्षा प्राप्ति के समान अवसर दिए गए। अब शिक्षा प्रत्येक भारतीय को जाति, धर्म, लिंग आदि भेदभावों से रहित होकर मिलने लगी।

3 जनजातीय समाजों ने शिक्षा हासिल करने का अधिक से अधिक प्रयास किया है।

4 समाज की आर्थिक दशा भी शिक्षा प्रणाली पर गहरा प्रभाव डालती है। जो समाज आर्थिक दशा से समृद्धशाली होता है, समाज की शिक्षा प्रणाली प्रगतिशील होती है। क्योंकि समृद्धशाली समाज में शिक्षा केंद्रों का खोलना एवं उनका संचालन करना आसान होता है। उनके भवन, प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय, फर्नीचर, अध्यापक, हेडमास्टर, प्रिंसीपल व अन्य सभी शिक्षण सामग्री एवं सहशिक्षण सामग्री की पर्याप्त व्यवस्था के कारण शिक्षा को बालकों तक सुचारु रूप से पहुंचाया जा सकता है।

5 सामाजिक मूल्यों, आदर्शों और आवश्यकताओं का प्रभाव भी शिक्षा प्रणाली पर पड़ता है। समाज अपने मूल्यों, आदर्शों और आवश्यकताओं के अनुसार ही शिक्षण प्रणाली की व्यवस्था करता है।

6 शिक्षा पर समाज की धार्मिक दशा का भी प्रभाव पड़ता है। समाज, शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार गठित करता है ताकि समाज के उद्देश्यों को पूरा किया जाए।

निष्कर्ष

समाज और शिक्षा में बड़ा अटूट संबंध है। जैसा समाज होगा वैसी ही उस समाज की शिक्षा प्रणाली होगी। यदि समाज समृद्धिशाली होगा उसकी शिक्षा प्रणाली भी उसी प्रकार प्रगतिशील होगी। शिक्षा हमेशा समाज के जीवन की संपूर्ण विधि पर आश्रित रही है। अतः इस विधि के बदल जाने पर शिक्षा का बदल जाना स्वाभाविक है। जिस समाज की शिक्षा प्रणाली जितनी प्रगतिशील होती है, वह समाज उतना ही समृद्धिशाली होता है। इसलिए समाज की उन्नति व विकास शिक्षा पर ही आधारित है।

सन्दर्भ

1 सक्सेना स्वरूप (2005) शिक्षा सिद्धांत, मेरठ: आर.लाल बुक डिपो

2 सक्सेना सरोज (ई.डी.) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, आगरा साहित्य प्रकाशान

3 शर्मा ओ.पी. एंड खान एन. (ई.डी.), एजुकेशन सिस्टम इन इण्डिया, जालंधर: मॉडर्न पब्लिशर